Cosmos An International Journal of Art & Higher Education
A Refereed Research Journal
Vol 1/No 2 / Jul-Dec 2012 ISSN: 2319-8966

भावी अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमता एवं बौद्धिक स्तर

[1]ओम प्रकाश पनवार

किसी भी देष के विचारयुक्त षैक्षिक पुनर्निर्माण में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान षिक्षक का है। प्राचीन काल में यह धारणा थी कि षिक्षक जन्मजात होते हैं परन्तु बीसवीं षताब्दी के पूर्वाह्न में विष्व के लगभग सभी देषों में यह स्वीकार किया जाने लगा कि प्रषिक्षण देकर श्रेश्ठ व सुयोग्य षिक्षक तैयार किये जा सकते हैं। बहुत वर्षों से ही शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण एवं विशेष शिक्षा की आवश्यकता महसूस की गयी और सम्पूर्ण विश्व में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना हुई। एक अध्यापक को ही राश्ट्र क वास्तविक निर्माता के रुप में जाना जाता है। वह राश्ट्र के गौरव एवं उपलब्धियों को मापने का एक मापदण्ड है।

एक अध्यापक किसी भी षैक्षिक व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण एवं केन्द्रीय भूमिका निभाता है और उसी पर ही व्यवस्था की सफलता या विफलता निर्भर करती है। यह अध्यापक ही है जो विद्यार्थियों की आदतों, रुचियों, अभिरुचियों, व्यवहारों तथा चरित्र आदि के ढाँचे को गढ़कर आकार प्रदान करता है। यदि अध्यापक में अपने विद्यार्थियों के लिए 'रोल मॉडल' बनने की योग्यताओं का अभाव होगा तो कोई भी षैक्षिक व्यवस्था सफल नहीं हो सकती। अध्यापक स्कूल की दिषा में एक गतिषील सामर्थ्य है। बिना अध्यापक के स्कूल, बिना आत्मा के षरीर, बिना मांस एवं खून का एक कंकाल, बिना तत्त्व के छाया होगा।

भावी षिक्षकों का षिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति, सकारात्मक आत्म प्रत्यय एवं मानव जीवन से संबंधित मूल्यों को विकसित करके उनके व्यवहार में इस प्रकार परिवर्तन लाना होता है जिससे वह राश्ट्रीय शिक्षा के उद्देष्यों की पूर्ति करने में सफल हो सके और भावी पीढ़ी को षिक्षित करके वह अच्छे एवं उत्पादक नागरिक बना सके। शिक्षा का उद्देष्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होता है और उसका केंद्र–बिंदु भावी षिक्षक ही होता है। इसी कारण डी॰ ए॰ प्रेसकाट ने भावी षिक्षकों को ''अल्टीमेटस एजेंट ऑफ एजुकेषन'' कहा

'चीक"बीवसंत क्ण्ठण्भ्ण्च्ौण बेमददंप ;म्कनण
क्मचजजण्द्धज्ञंतदंजां ठतंदबीए कींतूंक

है। सच तो यह है कि भावी षिक्षक सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन लाने का एक प्रभावी एजेंट है। रुफिनी ने कहा है–''अध्यापक उस मोमबत्ती के सदृष है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाष देता है।'' प्रसिद्ध इतिहासकार एवं दर्षनषास्त्री हेनरी एडम्स ने कहा था–''षिक्षक षाष्वतत्व को प्रभावित करता है, कोई नहीं कह सकता कि उनका पभाव कहाँ समाप्त होता है।'' ख्याति–लब्ध दार्षनिक हवाईटहेड के षब्दों में, ''सब कुछ षिक्षक पर निर्भर करता है।'' भारतीय परंपरा में षिक्षक को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हुए कहा है कि

गुरुब्रह्मा गुरुर्विशणुः गुरुर्देवो महेष्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

शिक्षा आयोग ने भी षिक्षक की महत्ता प्रतिपादित करते हुए अपने प्रतिवेदन की प्रथम पंक्ति में विचार व्यक्त किया है कि, ''भारत का भाग्य उसकी कक्षाओं में विकसित हो रहा है।'' रायन्स ने षिक्षकों की विषेशताओं का विवेचन करते हुए कहा था, ''वे षिक्षक जो विद्यार्थियों मं विष्व–जीवन का उपयुक्त अवबोध विकसित करने में कुषल हैं, जो अपनी अंतर्दृश्टि के माध्यम से विद्याथियों की बौद्धिक–पिपासा जागरुक करने में सक्षम हैं, जिनमें दूसरों के लिए धैर्य, सहृदयता और सच्ची अनुभूति है, वे एक प्रबुद्ध और प्रगतिषील समाज के निर्माण में समर्थ हैं। इसके विपरीत निम्न कोटि के षिक्षण से अज्ञान, भ्रम तथा बौद्धिक और सांस्कृतिक जड़ता की ही उत्पत्ति हो सकती है।''

व्यक्ति, समाज, राश्ट्रीय और अंतर्राश्ट्रीय समुदाय के प्रति षिक्षक की भूमिका के संदर्भ में यह जानना अत्यंत वांछनीय है कि हमारे भावी अध्यापक और अध्यापिकाएँ इस भूमिका का सफल निर्वाह कर सकते हैं या नहीं। इसके अतिरिक्त यह जानना भी अति अनिवार्य है कि भावी षिक्षक अध्यापन व्यवसयाय के प्रति निश्ठावान है या नहीं। उनका बौद्धिक स्तर कैसा है? उसके व्यक्तित्व की क्या विशेषता हों? वह किन अभिक्षमताओं से युक्त हो? अध्यापन के प्रति निश्ठा व्यक्ति की अध्यापन अभिक्षमता की प्रतीक है। अभिक्षमता, इन विषेशताओं की लक्षण समश्टि है जो किसी विषिश्ट क्षेत्र में दक्षता अर्जित करने की क्षमता को प्रतिबिंबित करती है। भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में विद्यमान अध्यापन अभिक्षमता की जानकारी कितनी आवष्यक है, यह बात स्वतः सिद्ध हो जाती है। यदि षिक्षक प्रषिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में अधिकांष में अध्यापन अभिक्षमता अल्पांष रुप में मौजूद है तो बी॰ एड॰ अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में महाविद्यालयों में प्रषिक्षणार्थियो पर व्यय किया जाने वाला धन, षक्ति और समय पूर्णतया अर्थहीन है। इस प्रकार के षिक्षक अपने कार्यों में असफल ही सिद्ध होंगे और षिक्षण की संपूर्ण योजना को निश्प्रयोजन बना देंगे। इसके विपरीत भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाएँ वांछित अध्यापन अभिक्षमता से सम्पन्न हो तो राश्ट्र का भविश्य सुरक्षित है। किसी भी दृश्टिकोण से विचार किया जाये तो बी॰ एड॰ प्रषिक्षण हेतु प्रवेषार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता की परख अति अनिवार्य है।

अध्यापन अभिक्षमता के अभाव में प्रषिक्षण महाविद्यालय द्वारा किये गये सारे प्रयास निरर्थक साबित हो सकते हैं। इसी से संबंधित दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रष्न यह है कि षिक्षण प्रषिक्षण महाविद्यालयों में किन–किन बौद्धिक स्तरों के विद्यार्थी प्रषिक्षण हेतु प्रवेष लेते है ? कोई भी व्यक्ति जो शिक्षक बनना चाहता है उसके लिए आवश्यक है कि वह न केवल विषयवस्तु या शिक्षा क्रम के विविध पक्षों को समझने में ही सक्षम हो प्रत्युत उसमें ऐसी बौद्धिक क्षमता हो

1 *पीएचडी विद्वान, डी.बी.एच.पी.एस. चेन्नई (शिक्षा विभाग), कर्नाटक शाखा, धारवाड़*

कि वह शिक्षा के उद्देश्यों और उनकी प्रक्रियाओं से परिचित होने में समर्थ हो सके। यह सर्वमान्य तथ्य है कि अध्यापन अभिक्षमता, बौद्धिक उत्कृश्टता षिक्षक के व्यक्तित्व के आवष्यक अंग हैं। परन्तु भारत में एवं विदेषों में इस दिषा में अल्पकार्य ही सम्पन्न हुआ है। अधिकतर अनुसन्धानकर्ताओं ने पूर्व बौद्धक चरों उदाहरण के लिए बुद्धि व्यक्तित्व, अभिरूचि अभिवृति आदि के अध्ययन पर बल दिया है।

षिक्षण की प्रक्रिया में कौन–से तथ्य महत्वपूर्ण हैं तथा इनमें स किन तत्वों पर अधिक बल दिया जाए। इस प्रष्न का उत्तर ढूढ़ने में मनोवैज्ञानिक, शिक्षाषास्त्री और अनुसंधानकर्त्ता पर्याप्त कर रहे हैं किन्तु सफलता अभी दूर है, एक ऐसे सफल अध्यापक की खोज का प्रयास जारी है जो अपने ज्ञान के अवबोध के माध्यम से विद्यार्थियों की बौद्धिक जिज्ञासा को षांत कर सके और अपने धैर्य, सद्भाव और सहानुभूति से एक समन्वित व्यक्तित्व के विकास में सहायक हो सके। षिक्षक की सफलता के लिए उन्हें पूर्व बोधक, प्रक्रियात्मक और परिणामात्मक चरों के नाम से अभिहित किया जाता है। षिक्षक के व्यक्तित्व की विषेशताएँ और उसके पर्यावरण के विभिन्न कारक प्रथम श्रेणी में आते हैं। प्रक्रियात्मक चरों का संबंध कक्षा कक्ष में षिक्षक–शिक्षार्थी की अन्तर्क्रियाओं से निर्मित होने वाले प्रतिमानों से होता है, तीसरे प्रकार के चर षिक्षण के अन्यत परिणाम के बोधक हैं इनसे पता लगता है कि विद्यार्थियों ने कितना ज्ञान, कितनी कुषलताएँ और किस प्रकार की अभिवृति अर्जित की है।

इसीलिए आवश्यकता है कि इन दोनों चरों का अध्ययन किया जाए और उनके अर्न्तसंबंधों को समझा जाए।''
षोध समस्या का कथन : अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की अभिक्षमता, बौद्धिक स्तर क महत्त्व को देखते हुए अनुसंधानकर्त्ता ने यह जानने का प्रयास किया है कि क्या ये गुण भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में पर्याप्त मात्रा में विद्यमान हैं? क्या इन चरों पर प्रषिक्षणार्थियों के लिंग भेद एवं अध्ययन के विशय आदि का प्रभाव पड़ता है ? इन्हीं प्रष्नों के उत्तर खोजने के लिए समस्या का निर्धारण इस प्रकार किया है–''भावी अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमता, बौद्धिक स्तर ''

अध्ययन के उद्देष्य

1. भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता का मापन करना।
2. भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के बौद्धिक स्तर का पता लगाना।
3. भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता की लिंग भेद के आधार पर तुलना करना।
4. भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के बौद्धिक स्तर की लिंग भेद के आधार पर तुलना करना ।
5. भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता और बौद्धिक स्तर के संबंधों का अध्ययन करना तथा लिंग भेद के आधार पर सह–संबंध ज्ञात करना।

प्राकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित प्राकल्पनाएँ परीक्षण हेतु प्रस्तावित की गयी हैं :

1. अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की अभिक्षमता, बौद्धिक स्तर में लिंग भेद के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की अभिक्षमता, बौद्धिक स्तर में कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

समय और साधनों को ध्यान में रखते हुए समस्या को निम्न रुप में सीमांकित किया गया है :

1. प्रस्तुत अध्ययन हरियाणा राज्य के महर्शि दयानन्द विष्वविद्यालय, रोहतक से संबद्ध बीस षिक्षक प्रषिक्षण महाविद्यालयों तक सीमित किया है।
2. इस अनुसंधान में महर्शि दयानन्द विष्वविद्यालय, रोहतक से संबंधित सरकारी, सरकारी अनुदान प्राप्त एवं स्व–पोशित षिक्षक प्रषिक्षण महाविद्यालयों जिनको श्छ।।ब्श् द्वारा ग्रेड प्रदान किया गया है, को सम्मिलित किया गया है।
3. इस अनुसंधान में सत्र 2011–12 के 200 प्रषिक्षणार्थिं को सम्मिलित किया गया है जिनमें 100 भावी अध्यापक और 100 भावी अध्यापिकाएँ हैं।
4. प्रस्तुत षोध में सम्मिलित भावी अध्यापक कला, विज्ञान और वाणिज्य तीनों वर्गों से लिए गये हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्ष चयन की प्रक्रिया निम्न प्रकार संपन्न की गई– सर्वप्रथम हरियाणा राज्य के सरकारी, अद्र्धसरकारी और निजी षिक्षक–प्रषिक्षण महाविद्यालयों की सूची तैयार की गई। इनमें से बीस महाविद्यालयों को अध्ययन हेतु यादृच्छिक विधि से चयन किया। इन महाविद्यालयां में से यादृच्छिक चयन विधि से 100 भावी अध्यापकों और 100 भावी अध्यापिकाओं का चयन किया। जो निम्न प्रकार से है:–

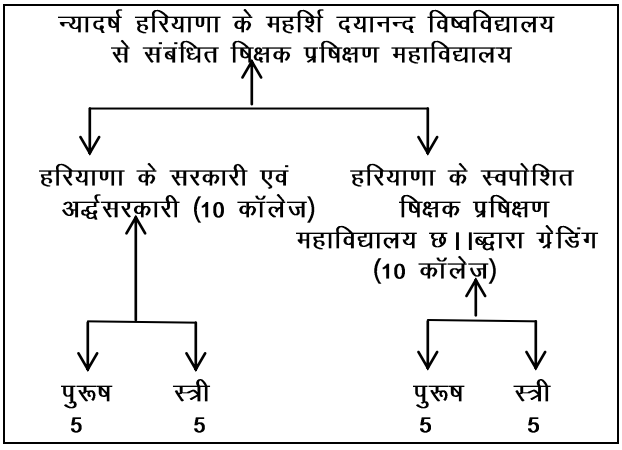

षोध विधि : अनुसंधान के लिए वर्णनात्मक विधि का चयन किया। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के व्यापक संप्रत्यय का उपयोग किया जायेगा क्योंकि प्रस्तुत अध्ययन का उद्देष्य न केवल भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता, बौद्धिक स्तर का

पता लगाना है अपित् उनके बीच परस्पर संबंध देखना तथा विभिन्न समूहों से उनकी तुलना करना भी है।

उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्त्ता ने भावी अध्यापकों के तीन चरों का मापन करने के लिए जो उपकरण काम में लिये हैं, वे निम्नानुसार हैं– मानवीकृत उपकरण प्रस्तुत अध्ययन में अन्संधानकर्त्ता ने भावी अध्यापकों के तीन चरों का मापन करने के लिए जो उपकरण काम में लिए हैं, वे निम्नलिखित हैं :

1. डॉ॰ सुरेन्द्र एस॰ दहिया एवं डॉ॰ एल॰ सी॰ सिंह का 'अध्यापन अभिक्षमता परीक्षण'।
2. डॉ॰ आर॰ के॰ टंडन का 'सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण'।

संख्यिकी विष्लेशण

न्यादर्ष के लिए चयनित 200 भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं द्वारा हीं दोनों परीक्षणों को पूरा किया जा सका। अतः इन्हीं से प्राप्त प्रदत्तों का विष्लेशण किया गया। विष्लेशण हेतु केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप, मध्यमान, मानक विचलन प्रोडेक्ट मोंमेट सह–सम्बन्ध की सांख्यिकी तकनीकों का प्रयोग किया है।

शिक्षक के वांछनीय गुणों की खोज दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाशास्त्रियों और शिक्षक प्रशिक्षकों का मुख्य विषय रहा है। एक 'सफल' या 'प्रभावी' अध्यापक किन गुणों से अलंकृत हो? उसके व्यक्तित्व की क्या विशेषताएं हो? उसका बौद्धिक स्तर क्या हो? वह किन अभिक्षमताओं से मुक्त हो? इस संबंध में अधिकृत रूप से कुछ भी कहना संभव नहीं है। किसी सेवा के प्रत्याशी के लिए उस सेवा या कार्य के प्रति सम्मान एक आवश्यक गुण है। इस सम्मान को उसकी परिपूर्णता तक ले जाने के लिए उच्च बुद्धि तत्व का होना भी आवश्यक माना गया है। प्रस्तुत अध्ययन में इन दोनों चरों से संबंधित परिणामों का विवेचना निम्न पंक्तियों में अंकित की गई है :–

अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की अध्यापक अभिक्षमता का प्रतिमान

1. महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में 89 प्रतिशत ऐसे प्रशिक्षणार्थी प्रवेश लेते हैं, जिनकी अध्यापक अभिक्षमता औसत एवं औसत कम है। केवल 11 प्रतिशत अध्यापक ही अच्छे एवं उत्तम अध्यापन अभिक्षमता से युक्त हैं।
2. 2.5 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों में ही उत्तम अध्यापन अभिक्षमता है।
3. 50.5 प्रतिशत भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं में निम्न (स्वू) अध्यापक अभिक्षमता है।
4. लिंग भेद के आधार पर भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं को अधिक सार्थक अन्तर है।
5. लिंग भेद के आधार पर जहां भावी अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमता 22 प्रतिशत् वहीं भावी अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता 44 प्रतिशत् है

तालिका – भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं का अध्यापन अभिक्षमता के आधार पर वर्गीकरण

क्रम संख्या	प्राप्तांक	आवृत्तियाँ लड़के लड़कियाँ	योग आवृत्तियाँ	प्रतिषत
1	0–10	0 0	0	0
2	11–20	5 4	9	4.5
3	21–30	34 8	42	21
4	31–40	53 74	127	63.5
5	41–50	8 14	22	11

संख्या 200 मध्यमान 33.6

मानक विचलन 0.173

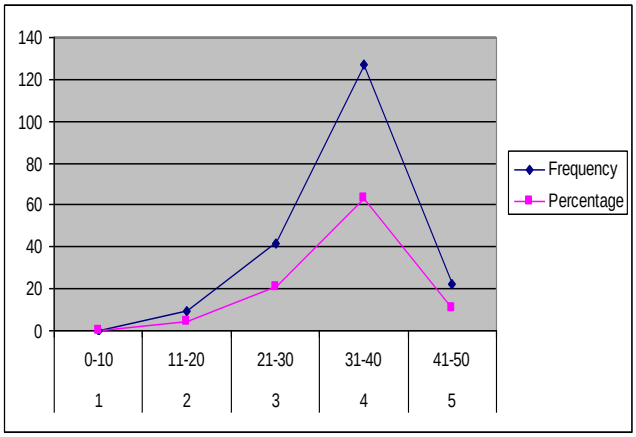

अध्यापन अभिक्षमता के प्राप्तांकों का आवृति बहुभुज

उपरोक्त तालिका एवं चित्र से स्पश्ट है कि अध्यापन अभिक्षमता के प्राप्तांकों की आवृति लगभग सामान्य वितरण को प्रदर्षित करती है। 89 प्रतिषत भावी अध्यापक, 33 प्रतिषत औसत तथा 56 प्रतिषत औसत से कम अभिक्षमता से यक्त है।

तालिका

विद्यार्थियों की संख्या	अल्प	निम्न	औसत	अच्छा	उत्तम	योग
पुरूश	7	63	22	7	1	100
महिलाएं	4	38	44	10	4	100
योग	11	101	66	17	5	200
प्रतिषत	5.5	50.5	33	8.5	2.5	100

उपरोक्त तालिका 200 भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता को प्रदर्षित करती है और नीचे दिये गये दोनों चित्र दोनों समूह के अध्यापन अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन को दिखाता है। उपरोक्त तालिका एवं नीचे दिए गए चित्रों से यह निश्कर्श निकलता है कि भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।

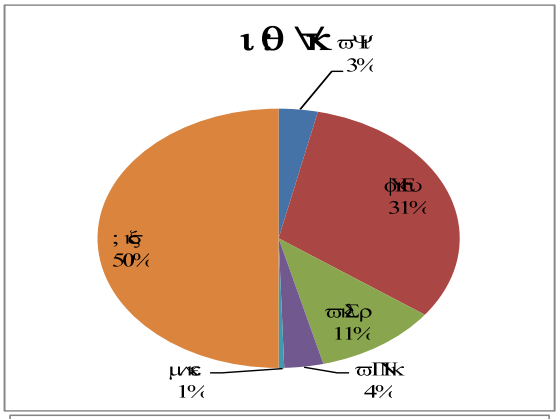

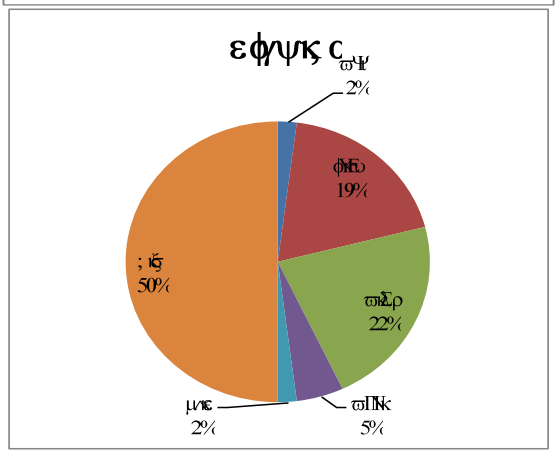

भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के बौद्धिक स्तर का प्रतिमानः

1. इन प्रषिक्षणार्थियों में 49 प्रतिषत ऐसे हैं जो सामान्य बुद्धि से युक्त हैं।
2. 10 प्रतिषत भावी अध्यापक सामान्य से अधिक बुद्धि से सम्पन्न है।
3. 24 प्रतिषत प्रषिक्षणार्थी बुद्धि श्रेश्ठ या अति श्रेश्ठ सोपानों के हकदार हैं।
4. केवल 17 प्रतिषत अध्यापक ऐसे हैं जो सामान्य से कम बुद्धि स्तर के हैं।
5. लिंग भेद के आधार पर भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के बौद्धिक स्तर में अधिक सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2
बुद्धि परीक्षण के प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण एवं मध्यमान, मानक विचलन

क्रम संख्या	प्राप्तांक	आवृत्तियाँ लड़के लड़कियाँ	योग	प्रतिशत
1	1–10	2 2	4	2.
2	11–20	6 7	13	6.5
3	21–30	10 4	14	7
4	31–40	27 13	40	20
5	41–50	25 20	45	22.5
6	51–60	10 25	35	17.5
7	61–70	5 18	23	11.5
8	71–80	10 7	17	8.5
9	81–90	5 4	9	4.5
10	91–100	0 0	0	0.0

संख्या 200 मध्यमान 33.6
मानक विचलन 0.173

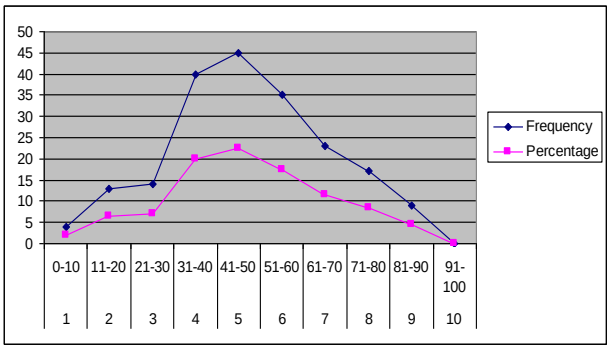

बुद्धि परीक्षण के प्राप्तांकों का आवृति बहुभुज

तालिका में बुद्धि परीक्षण के प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण एवं मध्यमान, मानक विचलन प्रस्तुत किया गया है साथ ही चित्रों द्वारा इनके प्राप्तांकों को भी प्रदर्षित किया गया है। इसी तालिका के अवलोकन से स्पश्ट है कि बुद्धि परीक्षण से उपलब्ध प्राप्तांक सामान्य वितरण प्रदर्षित करते हैं।

विभिन्न बौद्धिक स्तरों पर भावी अध्यापकों का प्रतिशत

बुद्धिलब्धि के आधार पर भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की बुद्धिलब्धि का वर्गीकरण विभिन्न वर्गों में मैन्युअल में दिए गए प्रतिमानों के आधार पर किया गया है जो इस प्रकार से है

तालिका
भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं का बौद्धिक स्तर के आधार पर वर्गीकरण

क्रम संख्या	प्राप्तांक	आवृत्तियाँ	श्रेणी	प्रतिशत	विवरण
1	77 से ऊपर	8	I	4	अतिश्रेष्ठ
2	65–77	40	ठ	20	श्रेष्ठ
3	53–65	20	ढ	10	सामान्य से अधिक
4	29–53	98	क	49	सामान्य
5	17–29	25	म	12.5	सामान्य से कम
6	5–17	9	श	4.5	निम्न
7	5 से नीचे	0	ळ	–	निम्न से कम

उपरोक्त तालिका से स्पश्ट होता है कि 200 भावी अध्यापकों में से कुल 8 भावी अध्यापक अति श्रेश्ठ बौद्धिक

स्तर के है और यह संख्या मात्र 4 प्रतिषत को ही प्रदर्षित करती है। भावी अध्यापकों में लगभग आधे 49 प्रतिषत सामान्य बौद्धिक स्तर के हैं। इसी प्रकार 12.5 प्रतिषत प्रषिक्षणार्थी सामान्य से कम बौद्धिक स्तर के हैं। जबकि निम्न बौद्धिक स्तर के केवल 9 (4.5 प्रतिषत) अध्यापक है। अति निम्न बौद्धिक स्तर का कोई भी प्रषिक्षणार्थी नहीं है। नीचे दिये गये दोनों चित्र भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रदर्षित करते हैं।

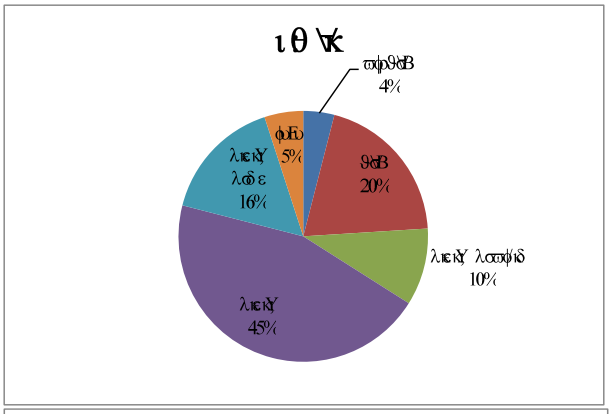

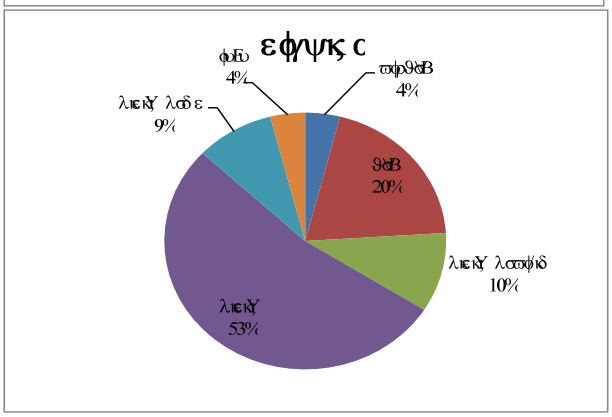

भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं का प्राप्तांक का तुलनात्मक बौद्धिक स्तर विवेचना

अध्यापन अभिक्षमता शिक्षक के जीवन की उस संभावना का द्वार खोलती है। जिसकी परिपूर्णता में उसवेळ जीवन का सारतत्व निहित है। लेकिन प्रस्तुत सर्वेक्षण विस्मयकारी परिणामों को इंगित कर रहा है। हरियाणा के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में 85 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी ऐसे आते हैं जो औसत, निम्न और अल्प अध्यापन अभिक्षमता की विभिन्न श्रेणियों के परिणामों से स्पष्ट है कि शिक्षक की प्राचीन गरिमा आज समाप्त हो चुकी है उसे एक निरीह प्राणी समझा जा रहा है। लिंग भेद के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

200 के न्यादर्श में केवल एक ही अध्यापक और चार महिला प्रशिक्षणार्थी ऐसे हैं जो उत्तम कोटि की अध्यापन अभिक्षमता से अलंकृत है और 17 भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में अच्छे स्तर की अध्यापन अभिक्षमता है। भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के बौद्धिक स्तर के विवेचन में निम्न तत्व उभर कर सामने आए हैं। बुद्धि परीक्षण के प्राप्तांकों की आवृत्ति से स्पष्ट है कि बुद्धि का वितरण सामान्य वितरण के अनुरूप है। बुद्धि परीक्षण के आधार पर सामान्य से अधिक बौद्धिक स्तर के 10 प्रतिषत प्रशिक्षणार्थी हैं और सामान्य स्तर के 49 प्रतिषत हैं जबकि 20 प्रतिषत श्रेष्ठ एवं 4 प्रतिषत अतिश्रेष्ठ बौद्धिक स्तर के हैं जबकि सामान्य से कम 12.5 प्रतिषत और निम्न बौद्धिक स्तर के केवल 4.5 प्रतिषत विद्यार्थी है। लिंगभेद के आधार पर भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के बौद्धिक स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। सामान्य से अति श्रेष्ठ स्तर तक 83 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों का होना इस बात की इशारा करता है कि इस पेशे की ओर भी अच्छी बौद्धिक क्षमता वाले लोग अग्रसर हो रहे हैं। निम्न बौद्धिक स्तर के प्रशिक्षणार्थी का अभाव तर्क संगत ही है क्योंकि निम्न बौद्धिक स्तर का व्यक्ति स्नातक या स्नातकोत्तर कक्षाएं उत्तीर्ण नहीं कर सकता।

भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता एवं बौद्धिक स्तर में सहसंबंध

क्रम संख्या गुणांक	अध्ययन चर	सहसंबंध
1.	अध्यापन अभिक्षमता (भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाएं)	0.825
2.	बौद्धिक स्तर (भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाएं)	0.994
3.	अध्यापन अभिक्षमता एवं बौद्धिक स्तर (भावी अध्यापक)	0.913
4.	अध्यापन अभिक्षमता एवं बौद्धिक स्तर (भावी अध्यापिकाएं)	0.942
5.	अध्यापन अभिक्षमता एवं बौद्धिक (भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाएं)	0.965

उपरोक्त सह–सम्बन्ध गुणांक के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्यापन अभिक्षमता (भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं) में धनात्मक सहसंबंध है। बौद्धिक स्तर पर भी भावी अध्यापकों में धनात्मक सहसंबंध है। भावी पुरुष अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमता एवं बौद्धिक स्तर में भी प्राप्तांक सहसंबंध गुणांक धनात्मक सहसंबंध को ही प्रदर्शित करता है। भावी अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता एवं बौद्धिक स्तर पर क्रम धनात्मक सहसंबंध है इसी प्रकार भावी अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता एवं बौद्धिक स्तर में उच्च सह संबंध देखने को मिलता है।